दृष्टिकोण

काव्य संग्रह

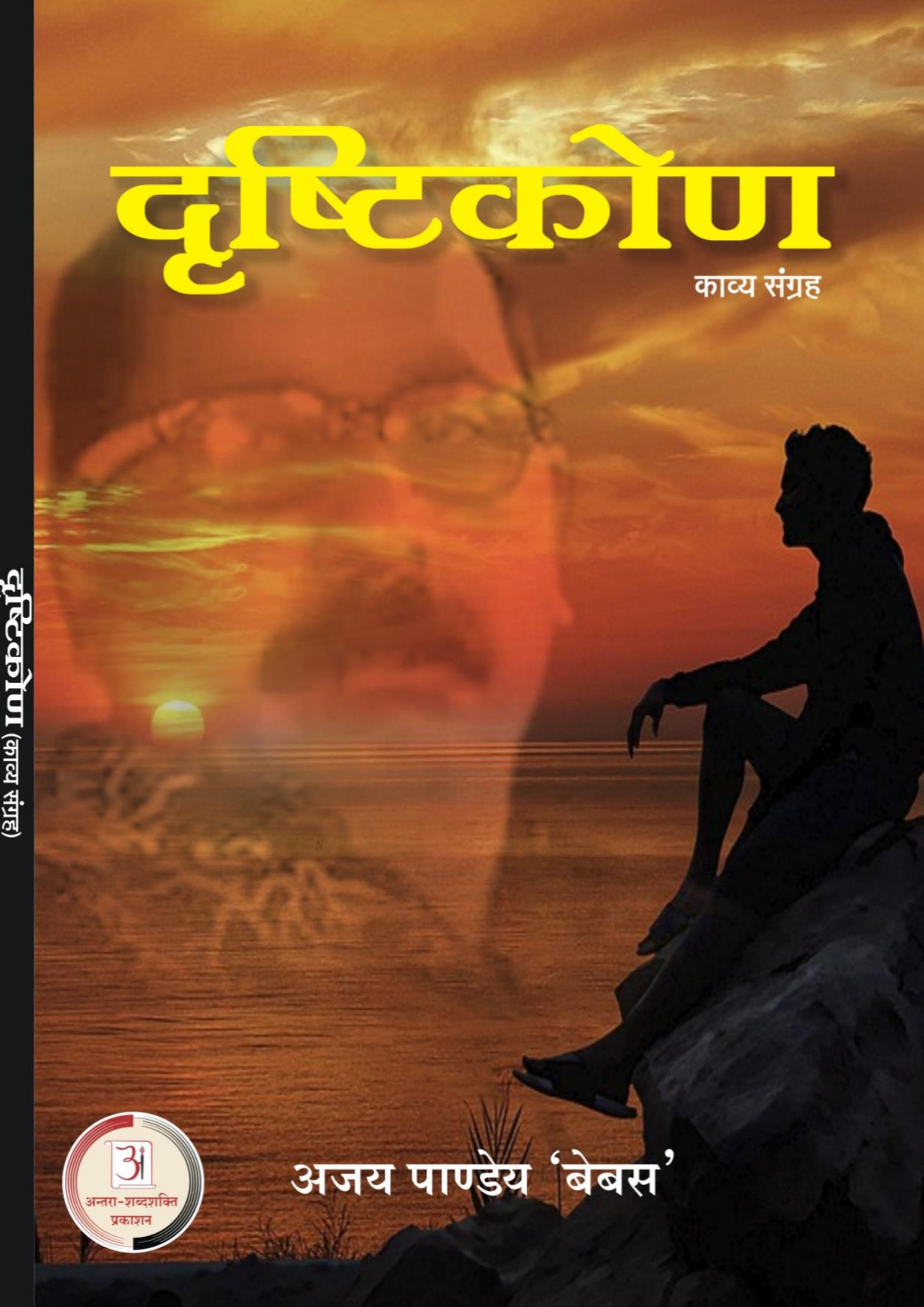

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

दृष्टिकोण (काव्य संग्रह)

दृष्टिकोण

(काव्य संग्रह)

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-253-1

संपादक- डॉ प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259. 9009465259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, अजय पाण्डेय 'बेबस'

मूल्य- 250.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY AJAY PANDEY BEBAS

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

किताब की भूमिका

कोई भी किताब की रचना, कोई भी लेखक अपनी भावनाओं को कलमबद्ध कर पाठक के रुचि के अनुसार समर्पित करता है।

कमोवेश रचनाएँ लेखक अपने मन की बातों के साथ-साथ सामाजिक परिवेश की घटनाओं और भावनाओं को भी लेकर चलता है।

मेरा प्रयास भी कुछ इसी तरह का है ,जिसे पढ़ने वाले पाठकों के मन को छूता हुआ दिखेगा।

मैं छंद मुक्त रचनाकार हूँ तथा सरल शब्दों में पाठकों के मन को गहराई तक छूने का प्रयास करता हूँ।

उम्मीद है आप पाठकों को मेरी ये गजल काव्य की रचनाएँ जरूर पसन्द आएगी।

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अनुक्रमणिका

1.	**जमाना**	8
2.	**आशिक**	9
3.	**फिसलना**	10
4.	**शिकवा**	11
5.	**लफ़्ज़**	12
6.	**चैन**	13
7.	**मुस्कान**	14
8.	**अक्स**	15
9.	**चाँदनी**	16
10.	**कायदा**	17
11.	**परछाई**	18
12.	**नजराना**	19
13.	**इबादत**	20
14.	**दिल**	21
15.	**बेखबर**	22
16.	**जिंदगी**	23
17.	**फरियाद**	24
18.	**बरसात**	25
19.	**दीदार**	26
20.	**तारीफ**	27
21.	**बहाना**	28
22.	**ख्याल**	29
23.	**प्यार**	30
24.	**फूल**	31

25.	**खूबसूरती**	32
26.	**आरजुएं**	33
27.	**पिया**	34
28.	**उलझन**	35
29.	**बीमार**	36
30.	**तकदीर**	37
31.	**भोर**	38
32.	**दगा**	39
33.	**पर्दा**	40
34.	**मजदूर**	41
35.	**बेअदब**	42
36.	**परख**	43
37.	**बसर**	44
38.	**भ्रूण**	45
39.	**अभियान**	46
40.	**सम्मान**	47
41.	**खैरियत**	48
42.	**इश्क**	49
43.	**राज**	50
44.	**ख्वाब**	51
45.	**दीदार**	52
46.	**दिलदार**	53
47.	**उलझन**	54
48.	**गुजरना**	55
49.	**कतराना**	56

50.	**पन्ना**	57
51.	**मोहब्बत**	58
52.	**हया**	59
53.	**यौवन**	60
54.	**मलकियत**	61
55.	**उल्फ़त**	62
56.	**गुलज़ार**	63
57.	**सुनना**	64
58.	**दिवाली**	65
59.	**कानून**	66
60.	**पीड़ा (व्यथा)**	67
61.	**पूनम**	68
62.	**कलियाँ**	69
63.	**बहार**	70
64.	**खत**	71
65.	**साया**	72
66.	**चिठ्ठी**	73
67.	**मिलन**	74
68.	**लोग**	75
69.	**पागल**	76
70.	**रूह**	77
71.	**यार पुराना**	78
72.	**मुलाकात**	79
73.	**काजल**	80
74.	**दर्द**	81

75.	**तोहफ़ा**	82
76.	**पलक**	83
77.	**रिश्ता**	84
78.	**नूर**	85
79.	**गुरुर**	86
80.	**फरमाना**	87
81.	**चंचल**	88
82.	**बारात**	89
83.	**नसीब**	90
84.	**नुमाइश**	91
85.	**कसक**	92
86.	**अरमान**	93
87.	**दिल**	94
88.	**आना-जाना**	95
89.	**खैरात**	96

जमाना

जमाने से कह दो! जमाना ही रहेगा।
रिश्ता-ए दस्तूर तो निभाना ही पड़ेगा।।

अंजामे मोहब्बत में ही अंजामे जिंदगी है।
मोहब्बत से जीते चलें! पैगाम ए जिंदगी है।।

तराना-ए मोहब्बत में! रिश्तों बीच हो कोई कटार नहीं।
टूट चले रिश्ता जैसे! हो शब्द-बाण का वो तलवार नहीं।।

आशिक

हम तो उनके आशिक हैं! आशिक पुराना।
जाए कोई कह दे जमाने से! जाने! "जमाना।।

दस्तूर यह मोहबत का! जमाने को है सिखाना।
क्या है मोहब्बत! दरमियां ए दिल और दीवाना।।

'बेबस' न हो जिंदगी कि जीना भी तो है जमाने से।
लेकर कोई बात पुराना! फायदा क्या रूठ जाने से।।

फिसलना

उनकी आशिकी में हम फिसले! आशिक जिनके! कई निकले।
ये वो हुस्न ही है! जिसकी आशिकी लिए जमाना भी फिसले।।

हम फिसले तो! सारा जग जाना।
जग फिसला तो! बस! जग जाना।।

हुस्न औ दीवानगी बीच! गजब यह जमाना!
हुस्न के आगे बेबस आज जमाना दीवाना।।

शिकवा

उनकी नजर में उनको इश्क मिला।
हम भूल गए! क्या शिकवा! क्या गिला।।

अपना तकदीर अपना ही लगे भला।
भाए जो तक़दीर को वही मुझे मिला।।

आज न कोई हीर! न कोई रांझा मिलता।
इश्क को जो भाए वही आज हीर दिखता।।

बेबस इस दिल को विवशता का तीर मिला।
कर छेद वो तीर मेरे दिल के उस पार निकला।।

इश्क! इश्क से मिलकर चलते हुए मिला।
भूल गिला-शिकवा! अपनी मंजिल जा मिला।।

लफ़्ज़

आसां नहीं मोहब्बत इस जमीं पर।
विखर जाए यह लफ्जों की कमी पर।।

करना तो! ध्यान रखना लफ्जो की नरमी पर।
टूट न जाए यह रिश्ता! किसी बातों की कमी पर।।

तलाश-ए मोहब्बत में! चाँद भी देखता जमीं की ओर।
है भी दागदार वो चाँद! फिर न छोड़े मोहब्बत की डोर।।

"बेबस" दीवाने मोहब्बत की आरजू लिए आज जमीं पर।।
मोहब्बत भी फिदा मोहब्बत से! आज दीवानों की सर जमीं पर।।

चैन

लेकर आरजुएं मोहब्बत का! चैन दिल का! खो दिया है।
करार-ए-दिल! अपना ही दिल को वेकरार कर लिया है।।

होगी उनसे मुलकात जरूर! रब के नाम छोड़ दिया है।
भूल नहीं पा रहा वो हसीन चेहरा! जिसे दिल दे दिया है।।

सच्चे दिल की वो शहजादी! चाहत का आशियाना बना लिया है।
उजड़े न अब ये आशियाना! कि शुकुन का ठिकाना बना लिया है।।

याद कर बेबस यह दिल तड़पता है! प्रीत जैसा निभा लिया है।
मिलेंगे फिर कभी के करार में एक शुकुन दिल में जगा लिया है।।

मुस्कान

यूँ ही नहीं चाँद भी मुस्कुराया करता है।
लेकर साथ चाँदनी! गगन में आया करता है।।

फिजाओं में आए बहार! वो लम्हा याद कराता है।
जिंदगी हो हंसी! पल दो पल! चाँद वो पल लाता है।।

चाँदनी में नहा उठे फिजाओं बीच चाँद भी इठलाता है।
संग चाँदनी! चाँद भी फिजाओं में बहारें नया बनाता है।।

हुस्न का चाँदनी बीच जाकर मिलना होता है।
देख यह नजारा! बेबस हर दिल रीझना होता है।।

अक्स

किसी और की महबूबा! तश्वीर दिख रहा उनके महबूबा का।
मोहब्बत के आईने से आज हर शख्स मजबूर इस मंसूबा का।।

खिला हो गुल तो गुलशन में फिजां बहार आए लगते।
हर वो घड़ी सज आते बहारों में चार यार आए लगते।।

मुबारक हो उनको! जिनके दिल में हर पल याराना होता है।
मिल जाएं जो कहीं ऐसे चार यार तो यारी का तराना होता है।।

मुबारक हो आपको ये दोस्ती हमारी कि यारी से ही दरवार है।
बेबस पल जाने इसे! बिन यारी-जीवन बस खर-पतवार है।।

चाँदनी

मुखड़ा-ए रौशन! आप चाँदनी जैसी।
किसी मन मंदिर से निकली पुजारन जैसी।।

रोज सजदा करूँ! हुस्न वो कोई सजी हो! गुलशन जैसी।
महक उठे यह फिजां सारा में बौराये भौंरों की गुंजन जैसी।।

हुस्न की क्या तारीफ करूँ! बेबस दिल को लगता सताए हो जैसी।
शुकुन देती नयनों में, जो लगे इश्क के समंदर में नहाए हो जैसी।।

कायदा

वायदे पर हुई मोहब्बत को कायदे से निभाया।
दूर हो अब ये मोहब्बत! हाय! सितम है ढाया।।

हर कदम! हर पल में जाकर गले को लगाया।
मोहब्बत क्या होता? मोहब्बत से ही निभाया।।

दिल में इश्क का एक सुंदर आशियाना बनाया।
गुजरे हर पलों में हमसफ़र बन हाथ मिलाया।।

बेबस नहीं अब यह दिल कि क्या सपना सजाया।
ख्वाबों को समेट कर दिल को अपना बनाया।।

परछाई

धीरे-धीरे वो आ रही होगी मुस्कुराते हुए।
सकुचाती नहीं! आती वो सर उठाते हुए।।

है नहीं वो ख्वाब! कि आए जताते हुए।
कर बहाना, आती वो बिना वक्त गंवाते हुए।।

बन्द कर देती धड़कनों को! बिना कुछ बताए हुए।
होता नहीं मालूम कि! ले जाए वो बिन जगाए हुए।।

ये वो मौत की परछाई है जो आती बिन सकुचाते हुए।
बेबस दिल क्या करे? जो जाए छोड़ सबको रुलाते हुए।।

नजराना

उनकी नजरों का मिला नजराना।
दिल चाहे आज खूब मुस्कुराना।।

आता नहीं उन्हें मोहब्बत को ठुकराना।
भाए उनका देखना और इतराना।।

होश उड़ाए उनका कतराना और इठलाना।
फूलों सी अदाएँ और फूलों सा झूमना।।

चाहूँ सपनों में भी मिलकर उनके संग मुस्कुराना।
बेबस न हो दिल मोहब्बत में कि ढूंढूं नया तराना।।

इबादत

हुस्न की इबादत करूँ! या इबादते इश्क डूब जाया करूँ।
मोहब्बत करता सनम आपसे! मोहब्बत में ही खो जाया करूँ।।

निगाहे चाँदनी में लगे आपका दीदार कर आया करूँ।
मिलो तो कहीं कि! बढ़ जाए आपकी उमर की दुआ करूँ।।

बेबस न रहे अब ये दिल कि, तुम्हारे ही नाम जीया करूँ।
सजदा ए मोहब्बत में सनम! चाहूँ रोज तुमसे मिला करूँ।।

दिल

जवां ये दिल जवां ये जिगर! थाम बैठे हैं।
मोहब्बत करके आपसे! होश गवां बैठे हैं।।

गुजरे वो पल कैसे? जिस पल में ये दिल दे बैठे हैं।
औरों की अमानत को जो दिल में बसा ले बैठे हैं।।

मजबूरी क्या जो दिल का! जिद्द कर बैठे हैं।
ख़ुदा माफ करे इसे अब कि गुनाह कर बैठे हैं।।

देख उनकी अदा-ए हुस्न! अपना दिल दे बैठे हैं।
बेबस दिल को मनाऊँ कैसे! जो ख्वाब देख बैठे हैं।।

बेखबर

गुजर रहे उमर पर! इश्क! जरा बेखबर होता है।
जीने की रहती तमन्ना में जीवन का रहबर होता है।।

आरजुएं ये दिल का! दिल से ही निकला होता है।
अधूरा रहा ख्वाब में दिल यह फिसला होता है।।।

चैन आए जिंदगी में! वो चैन ढूंढ रहा होता है।
हो न ख्वाब पूरा भी तो!, ख्वाब लिए होता है।।

बेबस जिंदगी की! उमर उस पर डराए होता है।
हो उमर लम्बी में ख़्वाब को साथ लिए होता है।।

जिंदगी

गुजर न जाए यूँ ही! जिंदगी! हम तुमसे मोहब्बत करते हैं।
यूँ ही ख्वाब में आया करो सनम! कि मोहब्बत करते हैं।।

दिल है दरिया सा! मोहब्बत का पानी रोज भर आया करता है।
रुक न जाए मोहब्बत की चाहत में दिल सजदा किया करता है।।

हसीन ओ चाँदनी तुम! हुस्न तेरा चाँदनी नजर आता है।
उल्फत ए इश्क में सनम! दिल यह पागल हुआ जाता है।।

बेबस दिल को मनाऊँ कैसे! सपनों में भी तस्वीर आया करता है।
टूट जाए जो सपना तो! धड़कनों में आकर रोज सताया करता है।।

फरियाद

उम्र के पैमाना जान! इश्क पर फरियाद न कर।
सुखी दरिया में भी बाढ़ आती! इसे जाना कर।।

बुझती नहीं प्यास कभी दिल की! बात यह सुना कर।
होते भी पेड़ बूढ़े तो बहार लाते! जा कभी देखा कर।।

स्वासों में होती इश्क की फिजाएं! जाना कर।
छोड़ चाँद! चाँदनी पराई हुई नहीं! माना कर।।

बन चाँदनी! ऐ हुस्न! अब ख्वाबों में आया कर।
चाँद पूनम का होकर दिल का ज्वार जाना कर।।

एहसास ए दिल! इश्क को आज समझा कर।
बेबस दिल की चाहत जान दिल में आया कर।।

बरसात

जी रहा हूँ कैसे? सनम इस बरसात में।
हर्ज क्या है? फिर से नई मुलाकात में।।

मिलती नहीं शुकुन अब किसी रात में।
याद आए पर धड़क उठे दिल किसी बात में।।

बात कह रहा नहीं यह आज किसी जज्बात में।
बेबस दिल आशिक हो चला पहली ही मुलाकात में।।

दीदार

टुटे दिल किसी हसीना का दीदार मत किया करें।
हो जाती दिल्लगी लगे में, इंतजार मत किया करें।।

आकाश को उग आए चाँद संग चाँदनी का दीदार किया करें।
हो जो घनघोर अंधेरा तो आकाश में चमकते तारों से मिला करें।।

छोड़ गिला-शिकवा! दिल को समझाया करें।
बेबस दिल को सपने सुहाने में ले जाया करें।।

तारीफ

जा चली उमर में अब किसकी तारीफ करूँ।
अपने दिल का करूँ या किसी हुस्न का करूँ।?

प्यार का उनके आंगन में जा दिल बसता! क्या करूँ।?
अनजान रह रहा आरजुओं में मन रमता! क्या करूँ।?

नयनों को सताए वो कोई हुस्न में इस दिल का क्या करूँ।?
धड़कनों को झेलता इस दिल को कैसे आज समझाया करूँ।?

मीठी-मीठी रही उनकी हर बातों से लगे खो जाया करूँ।
मिलतीं नहीं अब में! उनसे कैसे यह शिकायत कर आया करूँ??

मनाकर अपना दिल को अब! उनकी खुशी का दुआ करूँ।
बनी रहें वो अपने आंगन का फूल में!दिल को समझाया करूँ।।

बहाना

मौसम रंगीन! शाम है सुहाना।
गोरी! देखूँ तुम्हें कर कोई बहाना।।

हो न कोई बहाना! मौसम है सुहाना।
है ये दिल आपके नाम आज दीवाना।।

रूठें न! लेकर कोई बात अब पुराना।
बेबस यह दिल जाने न! छोड़े याराना।।

ख्याल

भूले में भी भूल नहीं पाता! वो ख्याल आप होती हो।
चाँदनी में नहा आईं! हर पल की वो हसीं लगती हो।।

देखूँ जो तस्वीर आपकी! हुस्न वो कोई परी लगती हो।
ख्वाब ए जिंदगी का! बहार बन आई सी लगती हो।।

बहारे जिंदगी! एक हसीं ख्वाब सा लगती हो।
बेबस हर दिल को हर पल सताए लगती हो।।

प्यार

होता नहीं प्यार! यूँ कहें कि प्यार हो जाता है।
दिल की बात है जो किसी दिल से मिल जाता है।।

भूल जाए दीवानगी में! कब रात हुई कि कब दिन होता है।
प्यार हमेशा मौसम के बसन्त बहार आए जैसा होता है।।

मिले हर कोई को ऐसा प्यार! वो कहाँ होता है।
मिले दिल से दिल में ही सनम का वो कोई होता है।।

गजब लगे प्यार में गजब का इंतजार होता है।
बेबस नहीं कोई! मिले दिल का यार जहाँ होता है।।

फूल

एहसासों के बगिया से तोड़! एक फूल भेजा हूँ।
रख लेना सनम! बड़े अरमानों से दिल भेजा हूँ।।

ख्वाबों में रोज आती रही आपकी तस्वीर देख।
जुड़े में सज आए आपका वो फूल मोगरा भेजा हूँ।।

बेबस दिल की बात है जहाँ में बताऊँ क्या आपको।
सनम की याद में भाए वो फूल कह आपको भेजा हूँ।।

खूबसूरती

खूबसूरत हर दिल में खूबसूरत आपका भी दिल है।
हो न सके बेदर्द वह दिल! जो हर अजीज सा दिल है।।

मिली है जिंदगी में तो करार ए दिल मोहब्बत निभा चलें।
रह न जाए जीवन की अधूरी कहानी में आओ प्रीत लगा चलें।।

खुशियों का मिलता नहीं पल! पल वह ढूंढने से कभी इस जहां में।
बेबस न रह जाए आरजू हमारी कि आओ मिलकर गीत गा चलें।।

आरजुएं

अपने इन आरजुओं का मैं क्या करूँ?
हसीना कोई की तस्वीर पर मरा करता है।।

दिन-रात के ख्वाबों में चाहूँ मिला करूँ।
कि दिल अब उन्हीं के नाम धड़का करता है।।

बहारों में खिली हो कब से वो कोई सुंदर फूल जैसी।
चले हवा जो तो फिजां भी खुशबू से महक उठा करता है।।

देख नजारा ए गुलशन का बहक न जाए दिल कहीं कि।
उनसे मिलने को ये दिल रोज नया कोई बहाना ढूंढा करता है।।

बेबस यह दिल में अधुरी रही मेरी आरजुओं पर।
मिले शुंकूँ कि मुझे मेरे दिल को मनाना पड़ता है।।

पिया

यूँ ही कोई हमसे! रोज-रोज मिला न करो।।
पिया रहते परदेश! बात यह जाना भी करो।।

आए जो खत! मेरे नाम तो-मत खोला करो।
रहती है निज बातें हमारी! मत बोला करो।।

फौजी हैं वतन का! वतन के लिए जीते-मरते।
रोज आती नहीं चिट्ठी उनकी! बात यह माना करो।।

उलझन

यूँ ही राहे जीवन में मोहब्बत!
उलझ जाए दिखे तब जिंदगी।।

ऐ जिंदगी! आज तू बता जरा।
हो गई मोहब्बत में क्या हो वन्दगी?

हुस्न और वह उनकी भोली सूरत।
बेबस हो उलझ जाए दिखे मोहब्बत की जिंदगी।।

बीमार

चाँद आजकल बीमार चल रहा है।
बहाने चाँद! जमीं पर इश्क जो हो रहा है।।

फिजां भी आजकल हैरान हो चला है।
इश्क की आँधी सरे-आम जो बह रही है।।

गुजरे उमर के लोगों में आज जहाँ इश्क का बयार है।
जवां दिलों में तो इश्क के नाम हवस की आँधी चल रही है।।

देख तमाशबीनों की इस दुनिया को आजकल में।
बेबस ये पल इश्क को हवस की मिट्टी में दफन होते देख रहा है।।

तकदीर

चाँद भी पुराना! अल्फाज ए इश्क भी पुराना है।
कभी न जाए इश्क की चाहत! रहा यही जमाना है।।

हो जाए इश्क जो! तो ये तकदीर का फ़साना है।
टूट न जाए दिल में! इश्क का यह अफसाना है।।

दीदारे हुस्न में! हो इश्क उन्हीं से! दिल ढूंढे कई बहाना है।
बहाने चार कर ये दिल चाहे! उन्हीं संग बने नया आशियाना है।।

बेबस दिल को कोई मनाए कैसे कि इश्क तो जाना-पहचाना है।
हो जो दीदार सनम का रोज-रोज में दिल ढूंढे हर पल नया बहाना है।।

भोर

भोर का चाँद है! थक गया होगा।
दूर तलक संग चाँदनी का होगा।।

समंदर आए लहरों सा चाँद का दिल रहा होगा।
संग जो रही चाँदनी से इश्क का ज्वार उठा होगा।।

छुपाए छुपती नहीं! एहसास ए दिल जो होगा।
परवाने मोहब्बत में! चाँद आज ठहर गया होगा।।।

दीवानें न जानें मोहब्बत का यह अफ़साना में।
आकाश आए बादलों के बहाने छिप गया होगा।।

दगा

इकरार ए मोहब्बत में भी दगा दे दिया है।
सनम वो कोई यह एहसास करा दिया है।।

इश्क की गहराई में ले जाकर अब, आग लगा दिया है।
मोहब्बत में दूरी ए दरिया बना, दिल में ताला लगा लिया है।।

वेरुख हो चली मोहब्बत में गुमनामी का मुहर लगा लिया है।
मोहब्बत में बेबस इस दिल को लगे किसी ने जहर पिला दिया है।।

पर्दा

पर्दे की रही मोहब्बत आज बेपर्द हो गई है।
इजहार ए इश्क जो आज सरेआम हो गई है।

नाम लेकर नए दौर का! जान-पहचान आम हो गई है।
मोहब्बत के नाम बढ़ी दीवानगी आज शहर-ए-आम हो गई है।।

रिश्ते में चार चाँद के जगह, आपस में शक की बदली छाने लगी है।।
निज मोहब्बत में जबसे मोहब्बत की और परछाइयाँ मन को सताने लगी है।।

मजदूर

मत हँसो उन तारों पर, जो रात भर जग को रौशन करते हैं।
लेकर अपनी चाँदनी, छिप जाए जो चाँद तो तारे ही जागा करते हैं।।

वो जुगनू भी कम नहीं कि रात आए पर दामिनी बन उजाला करते हैं।
होते जैसे महल आलीशान कई, पर चिराग से ही रौशन हुआ करते हैं।।

बहारों में सज आए फूलों को देख गुलशनें इतराया जरूर करते हैं।
आती जो बारी हार बनने की तो वो फूलें ही हार बन जाया करते हैं।।

जायज नहीं किसी मजदूर पर हंसना! कि वो मेहनत की रोटी खाते हैं।
आप महल कोई सुन्दर देखें कि वो मजदूर ही आपके लिये
आशियाना बनाते हैं।।

बेअदब

बेअदब हो चला आज का इश्क में! अदब कहाँ तलाश करूँ?
लोग जहाँ ख़ुदा को भूल रहे में! रहनुमा कोई नया कहाँ तलाश करूँ।।

बिन मौसम के बारिस हो! वो मौसम कहाँ तलाश करूँ।
हो जाए दिखे जो बारिस तो! कैसे इसे आज विश्वास करूँ।।

बेख़बर रह रहे जमाना बीच लोगों को कैसे आज निराश करूँ।
बेबस हो चला जमाना में आज क्यों में उनका उपहास करूँ।।

परख

मोहब्बत के पैमाने में, मैंने चाँद और सूरज को भी परखा है।
बहाने प्यार! एक को सुबह तो दूसरे को रात में उगते देखा है।।

हो दोनों का मिलन में! दिन और रात को होते देखा है।
बहाने चाँदनी रात! चाँद और सूरज को मिलते देखा है।।

दिन और रात की इस गजब दीवानगी बीच तारों को मुस्कुराते देखा है।
बेबस न रहे दिल उनका में! रात और दिन का मिलन से चाँद को
उगते देखा है।।

बसर

मालूम है कि- गजल भी उमर लिए चलता है।
देख दिलों की उमर-यह बसर लिए चलता है।।

जवां दिलों में यह-जवां धड़कनों को लिए चलता है।
गुजरे उमर पर वहीं धड़कनों का खबर लिए चलता है।।

मोहब्बत अरमान है दिल का जो हर अजीज दिल लिए चलता है।
बदलते अरमानों में दिल-मोहब्बत में शुकूँ का तलाश लिए चलता है।।

भ्रूण

आजकल! मोहब्बत के अफ़साने हजार हैं।
कुछ इस तरह लगे आज का बाजार है।।

तंग गलियों सा तंग कपड़ों का बाजार है।
नँगा दिख रहा वदन में दिखे नहीं व्यभिचार है।।

अस्पताल की नालियों में, दुर्गंध आती भरमार है।
कचरों के डब्बों में बेबस कन्या भ्रूण का भार है।।

अभियान

वो शहर में मिठाई की दूकान चलाते हैं।
दूकान आए लोगों को मिठाई खिलाते हैं।।

खाली डब्बों को बाहर सड़क पर फेंक आते हैं।
होगी सफाई जिनके जिम्मे उनके हवाले कर आते हैं।।

दुनियादारी की यही रीत लोगों को दुकानदार समझाते हैं।
बेबस वक्त देख रहा होता! कैसे लोग स्वच्छता अभियान चलाते हैं।।

सम्मान

हस्ती वाले हैं सोच-लोग सम्मान खरीदना चाहते हैं।
गजब दुनिया के गजब लोग! गजब चाह रखना जानते हैं।।

मिले जो चार कहीं! लोग मयखाना ढूंढने लग जाते हैं।
शराब के बोतल में शराफ़त का छाँव ढूंढने लग जाते हैं।।

उतरती जो आंखों चढ़ा नशा! वापस घर की दौड़ लगाते हैं।
सो रही सुहागन कोई पर तब वो नकली प्यार जताते हैं।।

खैरियत

स्वयं का बेगैरत की रही जिंदगी में लोग खैरियत पूछते हैं।
गजब आजकल के लोग! दूसरों की हैशियत पूछते हैं।।

खाते-पीते सब लोग हैं! पर अपने खाए-पीये का बखान करते हैं।
बीमार मन का बीमार लोग-दूसरों के खाये-पीये का हिसाब रखते हैं।।

वैध का घर जो देखा! वो खुद वैध बन बीमार लोगों का इलाज कर चलते हैं।
गले में हुई खरास को मिटाने जो खुद दूसरों के घर से गर्म पानी मांग चलते हैं।।

इश्क

इश्क आज लम्बे कतारों में खड़ी है।
एक किसी हसीना पर कई आंखें जा लड़ी हैं।

किसी का किसी से कौन सी आन पड़ी है।
खैरात में मिल रही हो मोहब्बत जैसे में कतारें बड़ी हैं।

जिधर देखिये! उधर दीवानों की गाड़ी खड़ी है।
दो रोटी के लाले बीच भी गले में मोतियों की लड़ी है।।

वाह रे आजकल का इश्क और यह इश्किया घड़ी।
बेबस माँ-बाप को भी लगे नहीं यह आफत है बड़ी।।

राज

होती है मोहब्बत दिल से! दिल को सँवारुं कैसे?
ऐ मोहब्बत! तुझे पुकारूँ कैसे?

गुजर रही उमर में-गुम हो रहे दिल का अरमान हैं।
इन अरमानों को बचाऊँ कैसे?

मिलो जो एक बार तो-मिलने की आखिरी निशां होगी।
मोहब्बत का यह अफ़साना! सुनाऊँ कैसे?

बन्द होती आंखों में रहती तस्वीर तुम्हारी।
वो तस्वीर बताऊँ कैसे?

राज ए मोहब्बत का-राज ही रह जायेगा।
राज यह छुपाऊँ कैसे?

ख्वाब

ख्वाबों में बसती! आपकी मोहब्बत।
मोहब्बत में दगा न दीजिये।।

दिल की लगी है ये मोहब्बत!
मोहब्बत ही कीजिये।।

दिल अरमानों का समंदर है!
समंदर ही रहने दीजिये।।

मोहब्बत भरी लहरों में सनम!
गोता! जरा! लगाने दीजिये।।

दिल की रहती ये आरजुओं में!
दिल से ही समझा कीजिये।।

जिन आँखों में जो बसी है तस्वीर आपकी।
उन आँखों को भी देखिये।

बेबस न रहे ये मोहब्बत में।
मोहब्बत से ही मोहब्बत कीजिये।।

दीदार

उनका ही दीदार हुआ।
उनसे ही मोहब्बत करते रहे।।

फ़साना ए प्यार में।
उनके ही नाम मरते रहे।

मिली नहीं वो मोहब्बत।
मोहब्बत! जिसे हम तरसते रहे।।

हुई नहीं सनम अब तक।
सनम अपना जिन्हें समझते रहे।।

बेबस रही आरजू मेरी।
जिन आरजुओं को लेकर चलते रहे।।

दिलदार

दिलदार हूँ!
दिल चुराने आया हूँ।
सनम! आपसे!
मोहब्बत निभाने आया हूँ।।

मेरा दिल! मेरा वसीयत!
वसीयत वो बदलने आया हूँ।।

हुआ जो दीदार में!
वसीयत आपके नाम करने आया हूँ।।

टूट न जाए! ख्वाब कहीं?
वो ख्वाब कोई नया लाया हूँ।।

मोहब्बत भरी बन्दगी में।
मोहब्बत का पैगाम लेकर आया हूँ।।

बेबस न रहे अब ये दिल!
मोहब्बत भरा दिल लेकर आया हूँ।।

यूँ ही नहीं मिलती मोहब्बत में।
मोहब्बत से ही मोहब्बत को निभाने आया हूँ।।

उलझन

सोच समझ कर चलूँ! फिर भी उलझ जाता हूँ।
ऐ जिंदगी! बता क्यों बहक-बहक सा जाता हूँ।।

है दुनिया झूठी! फिर भी विश्वास कर जाता हूँ।
उलझी हुई जिंदगी में एक बोझ सा बन जाता हूँ।।

जज्बातों की रही नहीं बन्दगी में! जज्बाती बन जाता हूँ।
नदियों में बह रही जलधारा सा जज्बात में बह जाता हूँ।।

बेबस रहे जिंदगी में भी मुस्कुरा जाता हूँ।
जान दूसरों की विपदा! हाथ बांट आता हूँ।।

गुजरना

गुजर रहा इस जमाने में गुजर रही जिंदगी है।
गुजर रही जिंदगी में किसकी इबादत करूँ।?

मोहब्बत भरा दिल है! किस पर एतबार करूँ।?
गुजर रही उमर में अब किसकी इबादत करूँ??

बेरहम जमाने में बेरहम होती ये दीवानगी।
बेरहम इस दीवानगी में किसकी अदा पर डूब जाया करूँ??

ऐ खुदा! अब तू ही बता! बेबस इन अरमानों पर।
किस पर इनायत कि किसकी इबादत करूँ।

कतराना

हम उनसे मोहब्बत करते रहे! वो हैं कि कतराते रहे।
क्या होती मोहब्बत! मोहब्बत से उन्हें समझाते रहे।।

नादान दिल का! दूर वो मोहब्बत से भागते रहे।
हम हैं कि मिलते रहे! नजर उनसे मिलाते रहे।

न हम अपने में रहे! न वो अपने में रहे।
नजरों से ही हम मोहबत उनसे करते रहे।।

आती जो इकरार की बातें! वो इनकार करते रहे।
वफ़ा ए मोहब्बत का! हम उन्हें समझाते ही रहे।।

मोहब्बत के इन अरमानों में बेबस थे! बेबस ही रहे।
एक अदद मोहब्बत को तरसते रहे! तरसते रहे।।

पन्ना

जिंदगी के पन्नों पर! चलो! आज कुछ लिख आता हूँ।
मोहब्बत होती क्या? आज मैं लिख कर बतलाता हूँ।।

चाँद गगन पर इठलाता क्यों? वो राज तुम्हें बतलाता हूँ।
अलग नहीं चाँदनी! चाँद से! फ़साना यह मोहब्बत का सिखलाता हूँ।।

एक दूजे को भूलते नहीं हँसों की जोड़ी! वो भाव तुम्हें सिखलाता हूँ।।
मद्धम हुई चाँदनी में आओ आज तुम्हें मोहब्बत का अफ़साना सुनाता हूँ।।

बेबस अपने दिल की कोई दास्ताँ बताना चाहता हूँ।
मोहब्बत भरे दिल से नया कोई तराना सुनाना चाहता हूँ।।

मोहब्बत

मिलती नहीं मोहब्बत! जोर लगाने से।
दिल की बात है! होती यह दिल लगाने से।।

हकीकत के फूल नहीं खिलते! कभी ख्वाबों से।
कह रहा आज यह दीवानगी में रहे नबाबों से।।

दूर होती रही मोहब्बत! मोहब्बत को बेगैरत हो अजमाने से।
खिले जो कोई फूल तो दिखे वह किसी गुलशन में सज आने से।।

हया

सज आए जो बहार फिजां में!
शर्म-हया के फूल खिलते।

पैमाना ए मोहब्बत का में!
भौंरे फूलों पर मंडराए दिखते।।

मोहब्बत भरे अरमानों की क्यारी में
मनचले भौंरे उड़ते।

गुलशन ए गुलजार फ़ूल भी
अपनी खुशबू दे भौरों से मिलते।।

यौवन

खिलखिलाती दिखे यौवन बहारों में।
गुलशनों में फूलों के सज आने से।।

हो जो अगर मोहब्बत भर दिल।
मानता नहीं तब कहीं दिल लगाने से।।

बेबस नहीं तब वो मोहब्बत में।
मुस्कुराता दिखे वो मोहब्बत के सज आने से।।

फिजां बहार को चाँदनी भी छाए।
देख दीवानों की दीवानगी में हुस्न का मुस्कुराने से।।

मलकियत

मलकियत नहीं दिल का! कि मोहब्बत पर एतबार करें।
रही दीवानगी में! जरूरी नहीं कि मोहब्बत का इजहार करें।।

दिल से हुई मोहब्बत में! मोहब्बत का इबादत करें।
दीवानगी भरी नग़मों से मोहब्बत का इकरार करें।।

आफत भरी न हो जिंदगी में सनम आपको याद करें।
मिले दिल से ही दिल पर हाथ रख-चाहेंगे इंतजार करें।।

उल्फ़त

उल्फ़त भरी जिंदगी है! सनम! सपनों में तो आया करें।
अफ़साना ए मोहब्बत का में! मोहब्बत को दिल से लिया करें।।

फरियाद यह दिल का! दिल से ही सुन जाया करें।
सनम!अब तो फरियाद ए दिल! दिल में आया करें।।

हिफ़ाजत में रहता नहीं यह दिल! हिफ़ाजत कैसे किया करें।?
मर्ज ए दिल का! आकर अपने दिल से भी जान लिया करें।।

हाल ए दिल जान यार का! बेबस इस दिल का पूकार सुन जाया करें।
दीवाना हुआ दिल है! मानता नहीं! कि आओ मिलकर गीत नया
कोई एक गाया करें।।

गुलज़ार

खुले में हो रही मोहब्बत जहाँ।
दीवाने क्यों रहें? प्यार के इजहार में।।

मुफ्त मिल रहा हो जहाँ शराब।
मधुशाला क्यों रहे आज गुलज़ार में।।?

पर्दे की लाज हो गई मोहताज।
खुले में आ रहीं हसीनाएं-साजो-श्रृंगार में।।

दीवानों के बीच नहीं रह मोहब्बत।
बेबस हो दीवानगी उलझ रहा हो आज झूठे प्यार में??

सुनना

सुनाया करें या सुन जाया करें।
फ़साना ए मोहब्बत में! मोहब्बत को जाना करें।।

अफ़साना यह मोहब्बत का! अफ़साना ही न रह जाए।?
हाल ए दिल मोहब्बत में! अपना भी हाल बताया करें।।

बीत रहा जो पल जिंदगी का! लगे न यह बेवफाई का।
सनम! आओ! कुछ पल साथ रह प्यार जताया करें।।

रहे न अरमान अधूरा कोई? हर्ज क्या है प्यार जताने में।
भूल सब गिला-शिकवा! अरमानों को फिर से जगाया करें।।

मोहब्बत जाने दिल को! दर्द होता विछड़ जाने में।
दर्द ए दिल का जान ये हाल! औऱ सताया न करें।।

बेबस अगर मेरा दिल तो बेबस आपका भी दिल है।
मोहब्बत भरा इस दिल को मोहबत से ही मिलाया करें।।

दिवाली

धन है तो! हर धनकुबेर दिवाली मना लेते हैं।
दिल से धनवान गरीब! देख कर ही खुश रह लेते हैं।।

लोग दीपावली मनाकर आपस में मिठाई खाकर
घर पर रह खुशियां बाँट लेते हैं।

एक दीया उनके नाम भी जरूर जले!
जिनकी पहरेदारी पर हम चैन की नींद लेते हैं।।

हर घर मे में दिवाली का दीप जले!
रिश्ता वह आज बना लेते हैं।

अमीर-गरीब का भेद-भाव को दूर रख
मिलकर हम सब खुशियाँ मना लेते हैं।।

मिल जाए जीवन की कोई नई राह! वो राह बना लेते हैं।
बेबस न रहे लगे कोई अपने जीवन में वो रिश्ता सजा लेते हैं।।

कानून

देश का रखवाला "कानून" जब भी गरीबी से मिला।
गरीब को छोड़ यह अमीरों का दास बनता दिखता।।

चंद पैसों में बिकता इसका ईमान में बेईमानों का चांदी रहता।
लाचार गरीबों के लिए तो यह गले में फंस आई हड्डी जैसा होता।।

बांध अपनी आंखों में पट्टी यह न्याय की देवी कहलाता।
चोर-सिपाही का खेल में यह मजबूत हाथों को सहलाता।।

कचहरी के नाम यह काले करतूतों का पहरेदार बनता।
धन-बल से परिभाषित यह कानून खुले-आम बिकता।।

पीड़ा (व्यथा)

मिल नहीं रही छुट्टी! कि शरहद पर चल रही लड़ाई है।
एक दीप मेरे नाम भी जला देना प्रिय! जो तुमने सजाई है।।

घाव अब हम अपने दुश्मनों को देंगे! जबाब में हमने कसमें खाई है।
रोज-रोज की हो यह दिवाली! हौशला वो जिगर में भर आईं है।।

रहेगा वतन तो होगी दिवाली!
लगे हर घर दिवाली छाई है।

शान ए तिरंगा में! जीने-मरने की कसमें खाई है।
हम हैं वतन के रखवाले! खातिर ए वतन जीवन पाई है।।

शरहद के उस पार खड़ा दुश्मन है ।
आए न इस पार कि हमने भी बन्दूक उठाई है।।

बेबस न रहना सनम दिल से कि
ये वतन ही हमारी माई है।

हो जो इस माई की रक्षा!
अंतिम सांस तक लड़ने की कसमें खाई है।।

पूनम

उग आया है पूनम का चाँद! कि सनम! चलो देख आते हैं।
खिला हो कोई गुल आंगन में! सनम! चलो चूम आते हैं।।

मिलता नहीं ये पल! कि मिलकर कभी कुछ कर पाते हैं।
व्यस्त रहती रही जिंदगी में! शायद ही हँस पाते हैं।।

बेबस न लगे अब जो तो! सनम चलो थोड़ा टहल आते हैं।
चैन आ जाए दो पल का ही सही में चाँद का दीदार कर आते हैं।।

कलियाँ

आईं हों जो कलियाँ गुलशन में! तोड़ा न करो।
फूल बन खिलेगी बहारों में! उन्हें छुआ न करो।।

डर न लगे कलियों को! ओ भौंरे! गुलशन में जाया न करो।
निकला हो जो नहीं फूल बनकर! उन्हें कभी डराया न करो।।

बहार ए जिंदगी में फूल ही सिखाते हंसना-मुस्कुराना।।
फूल बनने से पहले मुरझा न जाएं कलियाँ! कि पास जाया न करो।।

बहार

बिन कलियां बहार नहीं गुलशनों में।
आए बहार गुलशन में कि कलियों को आने दो।।

कच्ची कली कोई कचनार की हो जैसी।
खिला हो चमन में वो कोई फूल! फूल वह खिल जाने दो।।

बनो न दुश्मन उन कच्ची कलियों का।
कुछ दिनों का गुजर है वो दिन उनका गुजर जाने दो।

वेशब्री की आँधी में चाँद उगा नहीं करता।
लगें वो पूनम की चाँद जैसी! वो पूनम की रात आने दो।।

बेबस न रहें कलियां खिल-बागियों में।
गुलों से लगे गुलज़ार हुआ गुलशन! गुल बन आने दो।।

खत

लिख रहा हूँ यह खत! लेकर अफ़साने हजार में।
पढ़ लेना सनम! अल्फाजें वो! जो हैं तुम्हारे इंतजार में।।

गुजर रही जिंदगी! यूँ ही ख्वाबों के गहने कोहरे में।
बातें वो मेरे दिल का हैं! समझ न लेना इसे मोहब्बत के इजहार में।

होती रही है मोहब्बतें सदियों से।
ये वो मोहब्बत का खत है जो गुजरा है तेरे प्यार में।।

कब की रही मेरे इन आरजुओं में।
हाल ए दिल अपना! बताया नहीं! अपना किसी चार यार में।।

समझ लेना बेबस यह मेरे दिल का धड़कन।
दिल मेरा ढूंढे शुंकूँ! कि गुजरे जो यह जीवन तुम्हारे प्यार में।।

साया

जी रहा हो कोई तो! उसका साया है।
चंचल जीवन का यही एक माया है।।

रुक जाए जो स्वास हमारे तो।
ख़ाक को सुपुर्द होता यह काया है।।

हंसकर या रोकर! जीना तो है सभी को।
मिल चलो तो सबसे आज कि तेरा साया है।।

दूर गगन पर चाँद भी कभी इतराता।
रोता वह भी! जाने जब राहू की माया है।।

बेबस न रहना कभी जीवन में।
जीवन-मृत्यु यह खेल प्रकृति ने बनाया है।।

चिठ्ठी

मिला हो जो चिठ्ठी तो! पढ़ कर सुनाना।।
हाल ए दिल क्या तुम्हारा! अपना बताना।।

टूट रहे ख्वाबों का लिखा है नया फ़साना।
अफ़साना ए प्यार में होता है कितना बहाना?

मिलता नहीं वक्त का बहाने में।
बहाना ढूंढ रहा आज का दीवाना।।

होता नहीं प्यार जो उनका आजकल में।
क्या जानें वो कैसे होता है प्यार को निभाना।

बेबस हो गया है मोहब्बत! आज के मोहब्बत से।
बदलते अरमानों में मोहब्बत को हैं लोग भरमाया।।

मिलन

जो मिलो तो तुम हमसे! कह दूं। अब मत आया करो।
दूर होती मोहब्बत की आरजुओं में! अब सताया न करो?

बड़े अरमान से पाल रखा था जो सपना! वो टूट गया।
टूटे जो सपने हैं तो सपनों में भी तुम आया न करो।।

मोहब्बत के बिखरे इन ख्वाबों में सूनापन है।
आए ख्वाब नया कोई और! एहसास वह कराया न करो।।

लोग

मिलते हैं लोग कभी! बहार बनकर।
चलते हैं ऐसे लोग! उपकार करकर।।

सूरज को न सताओ दीया कहकर।
सुबह हुआ कि उजाला किया कहकर।

सूरज है! नमन करो उसे जीवन ऊर्जा समझकर।
साक्षात में दिख रहे कोई भगवान समझकर।।

जीवन तबतक अनमोल! जबतक सूरज का है मोल।
मूर्ख पढ़े-लिखे ही लोग सूरज को समझे वृत खगोल।।

जीवन की हर गति में ऊर्जा की जरूरत।
मिले जीवन ऊर्जा कि नमन करो अक्षय ऊर्जा समझकर।।

पागल

ढूँढू जो चाँद को गगन में! बादल नज़र आता है।
निकलता भी चाँद तो! पागल नज़र आता है।।

रूखा-रूखा सा दिखे चाँद! घायल नज़र आता है।
मद्धम हो रही रात में! फिर बादल नजर आता है।।

परेशान चाँद है! बेबस नजर आता है।
देख गगन पर बादल! घायल नजर आता है।।

रूह

मोहब्बत रूहानी हो! कहकर डराया करो।
मोहब्बत होती ही रूहानी! दिल को समझाया करो।।

दीदारे चाँदनी! चाँद भी गगन उग आया करता है।
होता मोहब्बत यह भी फिजां में! बातें दिल को बताया करो।।

सुनो कभी अपने दिल की बात दिल से।
बसा हो जो अरमान दिल में! वो अरमानों को जगाया करो।।

बदलती रहतीं बहारें फिजाओं में कभी-कभी।।
उन बदली बहारों में तुम भी कभी घूम आया करो।।

मोहब्बत है नहीं कोई पहेली नई में।
मोहब्बत हो जो तो! दिल से अपनाया करो।।

यार पुराना

याद तुम्हारी यारी का में! लिख रहा हूँ जो गजल! वह पुराना है।
बनी रही तुम्हारी यह याद में! गजल वह!जो बनाए रखे याराना है।।

खूबसूरत तुम्हारे हुस्न की मलकियत में मेरा मन दीवाना है।
मिलो जो राह में कहीं तो छेड़ूँ तुम्हें! नहीं यह मेरा बहाना है।।

बेबस न रहे मेरी तुम्हारी मोहब्बत में।
आओ मिलकर बना लें सपनों का नया कोई आशियाना है।।

मुलाकात

न मन के रहे! न ही दिल के रहे।
आया था दिल देने! वो लेने से रहे।।

कौन सी वो मुलाकात थी!
अंधेरी काली वो रात थी।।

सोये में देखा कोई सपनों सा।
उनसे हुई नई मुलाकात थी।।

डरी-सहमी सी नजरें उनकी।
बातों से लगा! जरूर कोई बात थी।।

खोया-खोया सा मन उनका।
खोये मन से बहकी-बहकी बात थी।।

पूछता रहा जो हाल उनका।
पछतावे में रही लगे कोई बात थी।।

फ़साना वह किसी के बेवफाई में।
जमाने से कुछ उनकी फरियाद थी।।

अफ़साना कोई मोहब्बत का।
बेबस हो उनके दिल को सताए थी।।

काजल

कर आंखों में काजल! दिल को भरमाये हुए हैं।
खूबसूरत हैं! मोहब्बत भरी नजरों से डराए हुए हैं।।

यूँ ही जमाना दीवानगी के आलम में।
देख दीवानगी लोगों का वो! नजरें चुराए हुए हैं।।

बेबस हुस्न है! आंखों से लगे घबराए हुए हैं।
कर आंखों में काजल दुनिया की नजरों से अपने को बचाए हुए हैं।।

दर्द

सनम का रूठ जाने से! दर्द हजार में।
दिल ही जानता! टूटे जो दिल प्यार में।।

न खत न कोई सन्देशा! दिन चार में।
उदासी भरा जिंदगी है! सनम के इंतजार में।।

भेजूँ अब क्या कोई नया सन्देश तुम्हें! सनम?
बेबस यह दिल चाहे जीना अब नए इकरार में।।

तोहफ़ा

कौन सा तोहफा पेश करूँ उनको कि बुलाएँ।
नशीब यह कैसा हमारा कि उन्हें समझाएं।।

हम बेबस! की मेरी धड़कनें मुझे ही बहकाए।
खैरियत में नहीं अब यह जान-ए जहां! एहसास जो हुआ जाए।।

ख्वाबों के शहर में मेरा नया आशियाना है।
ओ आती नहीं पास मेरे कभी कि ख्वाब वह बताएँ।।

पलक

बन्द ये हमारी पलकें कहती हमें।
ख्यालों के गलियारी में जाना है।।

कौन सा वह गलियारा ढूंढे हम।
जिस गलियारी में हमें जाना है।।

चाँद और तारों के बहाने ले जाता कोई।
सुनसान गली और लगे अनजाना है।।

टूटी कोई गुलाब की कलियाँ हैं।
जा चाँदनी रात में उसे पहचाना है।।

डूबते को मिला कोई तिनके का सहारा हो जैसे।
सुनसान में खड़ी उस कली को समझाया! क्या चाहे जमाना है?

रिश्ता

रिश्तों के डोर में बांध देखो! ख़ुदा ने भेजा है।
टूटे न यह रिश्ता कि! ख़ुदा ने हमें यहाँ भेजा है।।

हो भी जाए पानी पत्थर तो फिर वह पानी बन जाता है।
बदलते रिश्तों में दिल न हो पत्थर कि दिल ने पत्थर को परखा है।।

हम जो जाते दुनिया छोड़ तो साया भी साथ होता है।
बने यह रिश्ता जनम-जनम का जिसे हर दिल निभाये चलता है।।

नूर

किसी से हुई इश्क में, परवाह नहीं कि चाँद दूर है।
ये तो दिल ही है जो जाने अपने बेगम का हुस्न ए नूर।।

इश्क का कहीं नहीं कोई बगिया और फूलों की क्यारियाँ।
फरमाए इश्क में दिल ही बन जाए फूलों की क्यारियाँ।।

हुस्न ही लाए ख्वाब ए इश्क हर अजीज दिल में।
हुस्न के आगे बेबस दिल चाहतों का ले चले सैलाब है।।

गुरुर

कोई अपने हुस्न पे न करे गुरुर।
बुढापा भी आया करता है।।

कभी कद्र भी करें उन कद्रदानों का।
दीदारे हुस्न में जो छुप कर रहा करते हैं।।

हर वो दीवाने हुस्न का! वफ़ा-ए-प्यार में रहा करते हैं।
वफ़ा-ए-प्यार में हुस्न की तारीफ में नग्में लिखा करते हैं।।

फरमाना

फरमाए मेरे इश्क पर चाहूँ आपका पहल!
इश्क तो इश्क है! हो आपका भी पहल।।

हम नहीं वो शाहजहाँ! कि आप माँगे ताजमहल।
बादशाह ए दिल! कहें तो हाजिर यह दिल-ए-महल।।

रूहे नब्ज! धड़क रहा दिल यह सोचकर कि- आप मेरे ख्वाब हैं।
हम वो कोई गैर नहीं जो कहें- चल रहा मेरा दिन आज खराब है।।

दिल तो दिल है! दिल का क्या क़सूर।
दिल चाहे जानना! आखिर इस बेरुखी का क्या जबाब है।।

ये दीवारें! ये आईना! चाह रहे जानिए।
दिल धड़के उनके लिए ही जो हम ख्वाब हैं।।

चंचल

इश्क! इश्क है! नहीं कि यह मजबूर।
गर इश्क धड़कन ए दिल! तो नब्ज ए नूर भी है।।

उड़ाए होश कि इश्क! चंचल जरूर है।
इबादते इश्क में हुस्न दिखाए गुरुर है।।

गर जो कोई इश्क फ़रमाई है।
जरूर बन्दे पर ख़ुदा ख़ुदा रहनुमाई है।।

बारात

सज नहीं रही अब कोई दुल्हन कि बारात दिखे।
बयां ए तस्वीर! आज इश्क खुद हाजिर होता दिखे।।

तारीफ में तारीफ पाए वो तकदीर।
इश्क को ले चलता बाजार जो दिखे।।

अब इश्क नहीं पर्दा-ए-रहम पर।
सरे-आम आज यह लाचार दिखे।।

अब नहीं वो कोई पैमाना पुराना।
कि! इश्क में इल्मकारों का नशीहत दिखे।।

चाह नहीं अपनों में आज जहाँ।
घर का हर दरख़्त उन्हें गुनाहगार दिखे।।

नसीब

होंगे हजार दीवाने आपके! खुश-नसीबी आपका।
हम खुशनसीब अब के! हुआ जो दीदार आपका।।

हो कोई दीवाना तो बता दीजिये।
प्रेम गली में जाने से पहले बचा लीजिये।।

पानी में जो आएगी प्रतिबिम्ब आपका।
बहाने पानी भी दीदार हो! आया कीजिये।।

नुमाइश

इश्क! नहीं यह कोई नुमाइश का।
ख़ुदा गवाह! यह ख़ुदा फरमाइश का।।

गर जो हो इश्क दिल से जहां में।
इबादते इश्क! फरमाएं इश्क दिल से।

इश्क! साफ दिलों के लिये हौसला अफजाई है।
कद्रदानों के दिल में बजती वो कोई शहनाई है।।

कसक

कसक यूँ ही अब भी वही रह गई है।
वायदे पर जो मिलना था! अधुरी रह गई है।।

वक्त बीतता रहा अपने पाँव जमीं पर।
ख्वाब जो देखे थे हम दोनों! कहानी बन गई।।

न सूरज प्यारा न चाँदनी रात प्यारी लगे।।
सनम वो कोई के ख्यालों में दिल ठहर कर रह गई।।

मिल नहीं रहे अब कोई वो अल्फाजें आज।
ख्याल ए दिल सनम में गुनगुनाऊँ! बातें यह दिल कह गई।

आकाश में चमक रहे तारों से पूछ रहा मेरा दिल।
कौन सी बातें अधूरी रही जिससे यह सदियों का प्यार कहानी बन गई।।

अरमान

बड़े अरमान हैं मेरे! कि मिलूँ आपसे।
तोहफ़ा नया कोई चाहूँ लेना आपसे।।

मिलूँ-जुलूँ! करूँ बातें प्यार का! आपसे।
ये दिल न चाहे! रहे दूर अब आपसे।।

बहुत दिनों की रही यारी में मजबूर हूँ दिल से।
रख लेना मेरा दिल! कि मिलने आ रहा हूँ आपसे।।

दिल

कुछ लोग हैं कि मन की बात कहना नहीं चाहते।
टूटे दिल में एक साथ मिलकर रहना नहीं चाहते।।

घूँट के रह जाते एहसासों में मिलना नहीं चाहते।
किसी पेड़ में लगे हों पत्तियों की तरह रहना नहीं चाहते।।

आए दिन होती विष भरी पहलुओं को समझना नहीं चाहते।
भाग-दौड़ की रही जिंदगी में दूसरों को देखना नहीं चाहते।।

बाँट चलें दुख और दुःख की बातों में आना नहीं चाहते।
उनके जाने से समस्याएँ सुलझे भी तो जाना नहीं चाहते।।

बेबस हो चली सबकी जिंदगी! बात यह सुनना नहीं चाहते।
अब वो खुदा ही मालिक है जो जाने कि वो क्या करना चाहते।।

आना-जाना

उनके ही आने से मेरे ये अरमान पूरे हुए हैं।
तकदीर आज हमारे! आसमान छुए हुए हैं।।

सनम हैं वो मेरे! मेरे दिल के करीब रहे हुए हैं।
मैं साजन उनका! मिलकर आज चले हुए हैं।।

बेबस नहीं अब मन मेरा! जो साथ वो मिले हुए हैं।
जियें खुश होकर में आशियाना नया कोई बनाए हुए हैं।।

खैरात

खैरात में मिली हो जिंदगी जैसे।
भेंड़-बकरी बन लोग जी रहे हैं।

चींटी जैसे छोटे जीव भी जानते।
पंक्ति में चलना उसे भी भूल रहे हैं।।

हत्या-बलात्कार उनका मौलिक अधिकार हो जैसे।
दानव वह मानव भी कुछ ऐसा ही कुकृत्य कर चल रहे हैं।।

जैसी करनी वैसी ही होगी भरनी।
भूल यह कहावत मानवता को तार-तार कर चल रहे हैं।।

बेबस अजय देख रहा जो हाल आज का।
उस ख़ुदा से पूछ रहा उत्तर जो तांडव मानव से हो चल रहे हैं।

नाम- अजय किशोर नाथ पाण्डेय
उर्फ अजय पाण्डेय 'बेबस'

शिक्षा - बी० ए० (प्रतिष्ठा)

विद्या - कहानी, कविता, गीत-गजल, शेर आदि लेखन कार्य के अतिरिक्त पेंटिंग, तथा सामाजिक कार्य में रुचि। छंद मुक्त रचना के प्रति अभिरुचि।

सम्मान- पेंटिंग एवं लेखन में कई संस्थाओं के साथ राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त।

पता- चेटर, पोस्ट-जिला -गुमला
झारखंड, पिन 835207
व्हाट्सअप मो० न० 9973101940

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-253-1

मूल्य 250/-